Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 7, September-2018, ISSN 2230-7540

सुरक्षा की संकल्पना एवं सुरक्षा चिंतन का विकास

Dr. Vijendra Singh*

Associate Professor, Department of Defence & Strategic Studies, Sakaldiha P. G. College, Chandauli, Uttar Pradesh

सारांश – ***सुरक्षा बहुत ही व्यापक अवधारणा है। प्रारम्भ में इसे सैन्य एवं यौद्धिक मामलों तक ही सीमित माना गया और विभिन्न चिन्तकों एवं विचारकों ने इसे अपने-अपने तरीके से परिभाषित किया। किन्तु बाद के दशकों में सुरक्षा की एक विस्तृत अवधारणा सामने आई जिसके अन्तर्गत मानवीय सुरक्षा से लेकर वैश्विक सुरक्षा के समस्त पहलू इसमें समाहित हो गये। इसी के साथ-साथ सुरक्षा के विस्तृत आयामों पर भी बहस एवं लेखन होने लगा। इसके बावजूद सुरक्षा की एकमात्र सम्यक एवं सर्वमान्य परिभाषा देना शेष रह गया है। हम इसके लक्षणों से ही इसको परिभाषित करने का प्रयास करते हैं। प्रस्तुत लेख में सुरक्षा संकल्पना एवं इसके चिंतन के विकास का विश्लेषण किया गया है।***

मुख्य शब्द - ***राजनय, विकास, स्वर्णकाल, खतरा, शक्ति***

----------X----------

प्रारम्भिक काल में सुरक्षा अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों (International Relations) के अध्ययन का ही एक उप भाग माना जाता था जैसे अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक अर्थव्यवस्था, अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धान्त, अन्तर्राष्ट्रीय विधि, एरिया स्टडीज आदि। इसे भिन्न-भिन्न नामों- यथा सं. रा. अमेरिका में सुरक्षा अध्ययन, यूनाईटेड किगडम में स्त्रातेजिक अध्ययन- से जाना जाता था।[1] परम्परागत सुरक्षा अध्ययन प्रमुखतः पश्चिमी विचारकों द्वारा पश्चिमी सरकारों हेतु अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन के तहत किया गया। बाद में सुरक्षा समस्याओं के आयाम इतने व्यापक हो गये है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध अकेले उसका विश्लेषण एवं समाधान नहीं प्रस्तुत कर सकता है।

सुरक्षा अध्ययन अपेक्षाकृत एक नवीन अध्ययन-क्षेत्र है। द्वितीय विश्व-युद्ध के पूर्व स्त्रातेजी एवं सैन्य-मामले परम्परागत् सैन्य-हितों तक ही सीमित थे तथा सैन्य मुद्दों के अध्ययनकर्ता सैन्य एवं राजनयिक इतिहास के अध्ययन तक सीमित रहते थे। यद्यपि प्रथम विश्व-युद्ध की भारी लागत ने यह सिद्ध कर दिया था कि युद्ध का नियोजन मात्र सैन्य कमाण्डरों की कार्य सीमा से बाहर का क्षेत्र हैं। इसके बावजूद लगभग 20 वर्षों के उपरान्त ही द्वितीय विश्व-युद्ध में पहली बार असैनिक लोग सैन्य नियोजन में संलग्न हुए।

सुरक्षा शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द सेक्यूरस (Secures) से हुई है, जिसका अर्थ है, भय से मुक्त अथवा सुरक्षित रहना।[2] राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा सर्वप्रथम संयुक्त राज्य अमेरिका में द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात प्रस्तुत हुई, जिसने उन अवधारणाओं को कुछ हद तक प्रतिस्थापित कर दिया जो विभिन्न वाह्य एवं आन्तरिक खतरों से पार पाने के संयुक्त राज्य अमेरिका के संघर्ष की व्याख्या करती थीं। राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा उस समय संयुक्त राज्य अमेरिका की विदेश नीति का एक मुख्य निर्देशक सिद्धान्त बन गयी जब 26 जुलाई, 1947 को अमेरिकी राष्ट्रपति हैरी एस0 ट्रूमेन ने राज्य के राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम, 1947 (Nationa Security Act of 1947) पर हस्ताक्षर किया।[3] सुरक्षा चिंतन के प्रारम्भ में ऐसा माना जाता था कि सैन्य शक्ति एवं राजनय ही राष्ट्रीय सुरक्षा का एक मात्र उपाय हैं एवं सैन्य खतरे ही मुख्य हैं जिनसे राज्य को सुरक्षा की आवश्यकता होती है।

www.ignited.in

इस तरह सुरक्षा अध्ययन के स्वर्णिम युग (Golden Age) का प्रारम्भ हुआ। इसे सुरक्षा अध्ययन में प्रथम धारा (First Wave) की शुरूआत भी कहा गया। कुछ विद्वान इसका काल द्वितीय विश्व-युद्ध से 1965 तक तथा कुछ 1955 से 1965 तक मानते हैं। सुरक्षा अध्ययन की प्रथम धारा को स्वर्ण काल (Golden Age) इसलिए कहा गया कि सुरक्षा चिंतन पहली बार ब्यवस्थित रूप से प्रारम्भ हुआ। अपने स्वर्ण काल में सुरक्षा चिंतन मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका एवं सोवियत संघ के बीच की नाभिकीय प्रतिरोधकता की नीतियों, नाभिकीय हथियारों की विध्वंसकता से बचाव, नाभिकीय श्रेष्ठता प्राप्त करने के उपायों आदि के ही आस-पास घूमता रह गया एवं सुरक्षा के अन्य पहलू लगभग उपेक्षित ही रहे। सुरक्षा चिंतन की प्रथम धारा में नाभिकीय हथियारों के युद्ध कालीन आदान-प्रदान संयुक्त राज्य अमेरिका एवं सोवियत संघ के बीच की चर्चा इसलिए अधिक होती थी क्योंकि द्वितीय विश्वयुद्ध में नाभिकीय बम का प्रयोग हो चुका था और दोनों पक्ष नाभिकीय श्रेष्ठता प्राप्त करने की होड़ में लगे हुये थे।

हेराल्ड लासवेल (1936) ने बताया है कि सुरक्षा विश्व राजनीति में कौन क्या, कब एवं कैसे प्राप्त करेगा, को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

'वाल्टर लिपमैन के अनुसार' कोई भी राष्ट्र या राज्य उस हद तक सुरक्षित है जब तक कि यदि वह युद्ध न चाहता हो तो उसे अपने मर्म-मूल्यों (राजनैतिक स्वतन्त्रता एवं क्षेत्रीय अखण्डता) का परित्याग न करना पड़े किन्तु यदि उसे चुनौती दी जाय तो युद्ध में विजय के द्वारा उनको रक्षित करने में वह समर्थ हो। (A nation has security when it does not have to sacrifice its legitimate interests to avoid war, and is able, if challenged, to maintain them by war)[4]

'आरनर्ड वुल्फर' के अनुसार सुरक्षा से तात्पर्य राष्ट की खतरों से बिटने की योग्यता से है। (The absence of threats to acquired values)[5] आरनर्ड वुल्फर ने यह भी कहा है कि सुरक्षा एवं अर्थ (Economics) का सदैव ही अत्यन्त निकट सम्बन्ध रहा है।[6] सुरक्षा एवं अर्थ के अत्यन्त निकट सम्बन्ध का कारण आर्थिक क्षमता का सैन्य-शक्ति पर पड़ने वाला प्रभाव है। तेल-कूटनीति के प्रयोग ने यह सिद्ध कर दिया है कि प्राकृतिक-आर्थिक श्रोतों का स्त्रातेजिक महत्व भी अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष का कारण बन जाता है। खाड़ी संघर्षों ने इस वास्तविकता को पूरी तरह सतह पर ला दिया है। सैन्य एवं औद्योगिक उपक्रमों (Military & Industrial Complex) का राजनीतिक प्रभाव भी सुरक्षा एवं अर्थ के निकट सम्बन्ध को ब्यक्त करता है।[7]

'डेविड ए. बाल्डविन' ने माना कि आर्नल्ड बुल्फर के इस मुहावरे जिसमें उन्होंने कहा है कि 'मूल्यों की प्राप्ति के लिए खतरों की अनुपस्थिति ही सुरक्षा है', में कुछ अस्पष्टता है। बाल्डविन ने इस मुहावरे को इस रूप में परिवर्तित कर दिया कि 'मूल्यों की प्राप्ति में खतरों की न्यूनतम् सम्भावना ही सुरक्षा है।' उनका मानना था कि जिस तरह किसी दूसरे राज्य से आक्रमण की सम्भावना होने पर प्रतिरोधकता आदि नीतियाँ बनायी जाती हैं उसी तरह प्राकृतिक खतरों यथा भूकम्प की स्थिति में भी उपाय किए जाते हैं। इन उपायों से भूकम्प की सम्भावना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है किन्तु मूल्यों की प्राप्ति में होने वाले नुकसान कम हो जाते हैं। इस तरह बाल्डविन के द्वारा परिवर्तित रूपान्तरण 'मूल्यों की प्राप्ति' पर केन्द्रित हैं न कि खतरों की उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति पर।[8]

'स्टीफन डी0 क्रेजनर' के अनुसार- राष्ट्रीय सुरक्षा आर्थिक समृद्धि के मूल में निहित है। क्रेजनर से ही मिलते-जुलते विचार 'राबर्ट मैकनमारा' ने भी ब्यक्त किया है।

'राबर्ट मैकनमारा' के अनुसार- सुरक्षा सैन्य साज-समान ही नहीं है यद्यपि इसमें इसे शामिल किया जा सकता है। सुरक्षा सैन्य शक्ति ही नहीं है, यद्यपि यह इससे सम्बन्धित हो सकती है। सुरक्षा परम्परागत सैन्य गतिविधि ही नहीं है, यद्यपि यह इसके आस-पास हो सकती है। सुरक्षा विकास है। विकास के बिना सुरक्षा नहीं की जा सकती है।[9] सुरक्षा यदि कुछ लागू करती है तो यह न्यूनतम व्यवस्था एवं स्थायित्व लागू करती है। बिना आन्तरिक विकास के कम से कम एक न्यूनतम स्तर तक व्यवस्था एवं शांति सम्भव नहीं है। कानून

एवं व्यवस्था वह ढाल है जिसके पीछे सुरक्षा एवं विकास जो मुख्य तत्व होते हैं, को प्राप्त किया जा सकता है।[10]

द्वितीय विश्व-युद्ध के उपरान्त सुरक्षा का प्रयोग राज्य की स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता को रक्षित करने सम्बन्धी राष्ट्रीय लोक-नीतियों के क्षेत्र को वर्णित करने के लिए किया गया। राष्ट्रीय सुरक्षा जो कि सुरक्षा की समानार्थक प्रतीत होती है, को राज्य की राजनैतिक अनिर्भरता एवं राष्ट्रीय नीति-निर्माण की स्वतंत्रता को बनाये रखने की आवश्यकता से सम्बन्धित माना गया। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के साधन के रूप में सशस्त्र सेनाओं, राजनयिक एवं आसूचना सेवाओं को देखा गया। अन्ततः परम्परागत्-युद्ध एवं राजनय ही दूसरे राज्यों की सशस्त्र सेनाओं से उत्पन्न खतरों से निबटने के प्राथमिक उपाय के रूप में माने जाते थे। निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि जिसे सुरक्षा की आवश्यकता थी वह राज्य था तथा जिसके द्वारा सुरक्षा प्रदान की जा सकती थी, वह सैन्य शक्ति थी। वास्तव में यह सुरक्षा चिन्तन का अत्यंन्त संकीर्ण एवं सीमित तरीका था।

1965 के बाद से पुनः सुरक्षा चिंतन पुनः अधोगति की ओर जाने लगा। सुरक्षा अध्ययन की प्रथम धारा (First Wave) का अन्त हो गया तथा यह अध्ययन-क्षेत्र अवनति के दौर में चला गया। लेकिन 1975 के आते आते सुरक्षा चिंतन में पुनः एक नई ऊर्जा आई। इस क्षेत्र में पुनर्जागरण का दौर आया जबकि फोर्ड फाउंडेशन ने सुरक्षा मामलों के अध्ययन से सम्बन्धित अनेकों केन्द्रों को प्रायोजित करने का निर्णय किया तथा अन्तर्राष्टीय सुरक्षा अनुशासन की नींव रखी जो इस विषय के अध्येताओं का मुख्य मंच बना। इसके दायरे एवं आयाम बढ़ गये। पर्यावरणीय एवं सामाजिक मुद्दों को भी सुरक्षा चिंतन में जगह मिलने लगी। इसे ही सुरक्षा चिंतन में पुनर्जागरण काल एवं सुरक्षा चिंतन की द्वितीय धारा का प्रारम्भ माना गया। 1970 के दशक में सुरक्षा की चर्चा में आर्थिक सुरक्षा भी शामिल हो गई। 1980 के दशक में पर्यावरण की सुरक्षा के मुद्दे ने सम्पूर्ण विश्व का ध्यान आकृष्ट किया। 1990 के दशक में मानव सुरक्षा का मुद्दा केन्द्र में आ गया।[11]

हेराल्ड ब्राउन, (1983) ने अपनी रचना थिकिंग अबाउट नेशनल सिक्यूरिटीः डिफेंस एवं फारेन पालिसी इन ए डेन्जरस वर्ल्ड' में बताया है कि राष्ट्रीय सुरक्षा किसी राष्ट्र की समूचे विश्व के साथ तार्किक आधार पर अपने आर्थिक संबन्धों को बनाये रखने, अपनी प्रकृति, संस्थानों एवं प्रशासन को बाह्य खतरों से संरक्षित रखने एवं अपनी सीमाओं पर नियन्त्रण रखने की क्षमता है।[12]

इस तरह हम देखते हैं कि सुरक्षा का परम्परागत दृष्टिकोण केवल राज्य के सैन्य एवं वाह्य खतरो की ओर केन्द्रित था। बाद के विचारकों ने इसमें राज्यों के अन्दरूनी खतरों/समस्याओं/मुद्दों जैसे-सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय राजनैतिक, को इसमें शामिल किया। साथ ही साथ परम्परागत सुरक्षा चिंतन सं राज्य अमेरिका, ब्रिटेन या विकसित राज्यों की ओर क्रेन्द्रित था। उनकी सुरक्षा समस्याओं के अनुरूप था। यह तृतीय विश्व के गरीब राष्ट्रों की समस्याओं को ध्यान देने एवं समाधान पर बिल्कुल नहीं संकेन्द्रित था। 1980 के दशक के बाद सुरक्षा से सम्बन्धित अन्य संकल्पनायें-व्यापक सुरक्षा, सामान्य सुरक्षा, मानव सुरक्षा- के आने के बाद यह व्यापकता को प्राप्त हुआ।

वास्तव, में मानव सुरक्षा के बारे में पहला प्रमुख ध्यान बैरी बुजान ने ही अपनी पुस्तक में खींचा। 'बेरी बुजान' (Bary Buzan) के अनुसार- राष्ट्रीय सुरक्षा तीन स्तरों - वैयक्तिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय, से होकर गुजरती हैं।[13] बैरी बुजान ने अपनी पुस्तक 'पीपल, स्टेट्स एण्ड फीयर' में सुरक्षा को प्रभावित करने वाले पाँच प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की जो इस प्रकार है- सैन्य, राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय।[14] किन्तु अभी भी सुरक्षा चिंतन के केन्द्र में राज्य (State) ही था, सामान्य नागरिक नहीं। यही कारण है कि इसे मानव सुरक्षा (Human Security) का प्रथम चिंतन नहीं माना गया।

के0 सुब्रम्हणयम के अनुसार- राष्ट्रीय सुरक्षा मात्र क्षेत्रीय अखण्डता को बचाये रखना ही नही है बल्कि इसका अर्थ है कि राष्ट्र औद्योगीकरण के मार्ग पर तेजी से चल रहा हो और उसके पास न्याय पर आधारित एक संतुष्ट समाज एवं सामान्य दृष्टिकोण हो। कोई भी वस्तु अथवा कारक जो विकास के इस मार्ग में आंतरिक या वाह्य रुप से

खतरा उत्पन्न करता है वह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा माना जाएगा।

बाल्डविन ने कहा कि सुरक्षा को निम्न दो विशिष्ट पदों में परिभाषित किया जा सकता है, सुरक्षा किसके लिए (Security for Whom) एवं किन मूल्यों के लिए सुरक्षा (Security for which values)[15] बाद में डेविड बाल्डविन एवं अन्य ने सुरक्षा संकल्पना के अध्ययन को समझने के लिए निम्न पाँच प्रश्न उठाये और माना कि इन विशिष्ट पदों के साथ ही सुरक्षा के सही अर्थ को प्राप्त किया जा सकता है- -

(1) सुरक्षा किसके लिए (Security for whom)

(2) किन मूल्यों के लिए सुरक्षा (Security for which Values)

(3) कितनी सुरक्षा (How Much Security)

(4) किन खतरों से सुरक्षा (Security from what Thanks)

(5) किन साधनो से सुरक्षा (Security by what means)[16]

व्यापक सुरक्षा (Comprehensive Security)

समग्र अथवा 'व्यापक' विकास/सुरक्षा (Comprehensive or 'over all' Development/Security) पद का प्रयोग सर्वप्रथम जापान में सन 1970 के दशक में हुआ था। इसका मुख्य उद्देश्य था कि युद्धकालीन अपनी भूमिका से आगे बढ़कर वह अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में युद्धोत्तर काल में अपनी जगह मजबूत करे। सन् 1978 में जापान ने समग्र राष्ट्रीय मानव सुरक्षा पर रिपोर्ट (Report on Comprehensive National Security) में छः लक्ष्य निर्धारित किए- संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ सैन्य एवं सामान्य सहयोग में निकटता लाना, अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिए जापान की क्षमता को बढ़ाना, चीन और सोवियत संघ से अपने रिश्ते सुधारना, शक्ति सुरक्षा और खाद्य सुरक्षा को हासिल करना और बड़े भूकम्पों का सामना करने के उपाय तलाशना।[17]

डैविड डेविट (David Dewit) के अनुसार समग्र विकास/सुरक्षा सिर्फ एक उद्देश्यिका (Statement of Goals) ही नहीं थी, अपितु 'यह एक सुसम्बद्ध राष्ट्रीय शक्ति की श्रृंखला थी जिसमें आर्थिक कूटनीति और राजनीति जैसे विभिन्न कारक शामिल थे' ।[18] जापान के विपरीत आसियान (ASEAN) ने विकास/सुरक्षा की व्यापक परिधि में घरेलू और असैन्य स्तरों को भी शामिल किया गया। जैसा कि मलेशिया के प्रधानमंत्री महाथिर मोहम्मद ने कहा-"राष्ट्रीय सुरक्षा राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक स्थिरता, आर्थिक असफलता और सामाजिक सौहार्द के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है। इनके बिना दुनिया के सारे हथियार किसी देश की सुरक्षा उसके शत्रु से नहीं कर सकते है जिसकी आकांक्षा शायद एक बार भी गोली चलाए बिना पूरी हो जाए" (मुथैया अलगप्पा, 1988)[19]

सामान्य सुरक्षा (Common Security)

निःशास्त्रीकरण एवं सुरक्षा मुद्दों पर स्वतंत्र आयोग (1982) की रिपोर्ट में सामान्य सुरक्षा (Common Security) को पहली बार सुरक्षा विमर्श में प्रमुखता मिली। दूसरों के विरूद्ध नहीं बल्कि दूसरों के साथ सुरक्षा प्राप्त करना इसका मूल मंत्र है। (Achieving security with other, not against them)[20]

सामान्य सुरक्षा या आम सुरक्षा (Common Security) एवं व्यापक सुरक्षा (Comprehensive Security) का दृष्टिकोण मोटे तौर पर सुरक्षा का उत्तरी दृष्टिकोण (Northern Approach) माना जाता है। जहाँ राष्ट्रीय सुरक्षा एक पक्षवाद, प्रतियोगितावाद एवं सैन्यवाद की पक्षकार है, वहीं सामान्य सुरक्षा अन्तर्राष्ट्रीयवाद, सहयोग एवं अहिंसा की बात करती है।[21] जहाँ सामान्य सुरक्षा दो अथवा अधिक राष्ट्रों के बीच सहयोग पर आधारित है वहीं व्यापक सुरक्षा सैन्य, असैन्य वाह्य एवं घरेलू सभी मुद्दों को अपने में समाहित करती है। जिसके केन्द्र में मानव कल्याण है। मानव सुरक्षा मानव केन्द्रित है।

मानव सुरक्षा (Human Security)

मानव सुरक्षा की संकल्पना मुख्य रूप से संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम रिपोर्ट (1994) से जुड़ी हुई है। इसका

www.ignited.in

मुख्य श्रेय संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम से जुड़े हुए अर्थशास्त्री 'महबूब उल हक् जिनका 'मानव विकास सूचकांक' (HDI) एवं 'मानव प्रशासन सूचकांक (HGI) के निर्माण में मुख्य योगदान था, को जाता है। 'रिडिफाइनिंग सेक्यूरिटी द ह्यूमन डायमेंशन' नामक भाग में सुरक्षा के चारों मूल प्रश्नों-

- सुरक्षा किसके लिए
- किन मूल्यों के लिए सुरक्षा
- किन खतरों से सुरक्षा
- किन साधनो से सुरक्षा

तथा परम्परागत सुरक्षा के विकल्पों एवं मानव विकास के आवश्यक पूरकों पर प्रकाश डाला गया था।[22]

रिपोर्ट के अनुसार मानव सुरक्षा के केन्द्र में व्यक्ति या सामान्य जनता है। मानव सुरक्षा (Human Security) की संकल्पना 'भय से मुक्ति' एवं 'अभाव से मुक्ति' (freedom from fear and freedom from want) पर आधारित है। मानव सुरक्षा में उन मूल्यों को प्राप्त करने की बात की जाती है जो व्यक्ति के दैनिक जीवन में संरक्षा (safety), कल्याण एवं सम्मान के लिए आवश्यक होते हैं। इस रिपोर्ट में परंपरागत सुरक्षा अवधारणा की उन कमियों को रेखांकित किया गया है कि जिन खतरों से सामान्य जनता अपने दैनिक जीवन में रूबरू होती है। इनका उल्लेख परम्परागत सुरक्षा अवधारणा में नहीं है। बहुत से लोगों के लिए रोगों, भूख, बेरोजगारी, अपराध, सामाजिक संघर्ष, राजनीतिक दबाव या उत्पीडन (repression) तथा वातावरणीय खतरों से बचाव ही सुरक्षा है।[23] मानव सुरक्षा इस बात से संबंधित है कि जनता समाज में कैसे जीती (live) एवं सांस लेती है? वह किस प्रकार अपनी सद्इच्छा की पूर्ति करती है? बाजार एवं सामाजिक अवसरों में उसकी कितनी पहुँच है और वह संघर्ष में रह रही है अथवा शांन्ति में? रिपोर्ट के अनुसार मानव सुरक्षा अपने अन्तर्गत व्यक्तिगत सद्इच्छा तथा भविष्य, व्यक्तिगत सामथ्र्य एवं अवसर की सुनिश्चितता को भी समाहित करती है। अपने निर्णय एवं भविष्य के प्रति सुनिश्चितता की भावना से युक्त व्यक्ति को स्वयं की देख-भाल के लिए सक्षम बनाने के लिए पर्याप्त सामथ्र्यवान एवं क्षमतावान होना चाहिए।[24]

हम व्यक्तिगत रूप से कितने सुरक्षित एवं स्वतन्त्र हैं? मानव सुरक्षा के विमर्श में यह मुख्य प्रश्न है। सुरक्षा किसके लिए? महबूब उल हक के अनुसार मानव सुरक्षा के केन्द्र में राज्य एवं राष्ट्र नहीं बल्कि व्यक्ति एवं सामान्य जनता है। उन्होंने तर्क दिया कि विश्व मानव सुरक्षा के एक नये युग में प्रवेश कर रहा है जिसमें सुरक्षा की पूरी संकल्पना नाटकीय ढंग से परिवर्तित हो जाएगी। वे लिखते हैं कि हमें मानव सुरक्षा की एक ऐसी नवीन संकल्पना की रचना की आवश्यकता है जो हमारी जनता के जीवन में प्रतिबिम्बित होती हो न कि हमारे देश के हथियारों में।[25]

हक ने प्रारम्भ में ड्रग्स, रोगों, आतंकवाद एवं गरीबी को इन मूल्यों के लिए खतरा बताया। बाद में उन्होंने पाया कि कुछ अन्य मूल खतरे भी हैं जैसे- असमान विश्व व्यवस्था (unequal world order) जिसमें कुछ राज्य एवं श्रेष्ठ लोग (Elites) एक विशाल मानव समूह पर हानिप्रद स्थिति तक प्रभावी हैं। यह विश्व व्यवस्था विकास की प्रचलित धारणा एवं अभ्यास, सुरक्षा के लिए शस्त्रों पर भरोसा, उत्तर एवं दक्षिण के वैश्विक विभाजन एवं वैश्विक संस्थाओं (जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ) के लगातार हाशिए पर जाने से निर्मित हुई है।[26]

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) की रिपोर्ट के अनुसार मानव सुरक्षा के खतरों को निम्न सात भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

- आर्थिक सुरक्षा को खतरा
- खाद्य सुरक्षा को खतरा
- स्वास्थ्य सुरक्षा को खतरा
- वातावरणीय सुरक्षा को खतरा
- वैयक्तिक सुरक्षा- हिंसक अपराध, ड्रग तस्करी, हिंसा एवं बच्चों एवं महिलाओं के साथ दुव्र्यवहार।

- सामुदायिक सुरक्षा के खतरे- परिवारों का खत्म होना, परम्परागत भाषाओं एवं संस्कृति का विघटन, नृजातीय।
- राजनैतिक सुरक्षा के खतरे- राज्य दबाव या उत्पीडनए नियोजित मानवाधिकार उल्लंघन, सैन्यीकरण।[27]

तालिका 1

राष्ट्रीय सुरक्षा और मानव सुरक्षा में अन्तर

	राष्ट्रीय सुरक्षा	**मानव सुरक्षा**
किससे सुरक्षा	मुख्यतः राज्य	मुख्यतः व्यक्ति (वैयक्तिक)
किन मुल्यों के लिए सुरक्षा	प्रादेशिक अखण्डता और राष्ट्रीय स्वतंत्रता	निजी सुरक्षा और व्यक्तिगत स्वतंत्रता
किन खतरों से सुरक्षा	अन्य देशों से प्रत्यक्ष खतरा	प्रत्यक्ष और परोक्ष खतरे
किन साधनों से सुरक्षा	सुरक्षा के प्राथमिक उपकरण (उपाय) के रूप में बल का प्रयोग, किसी देश की अपनी संरक्षा के लिए एक पक्षीय ढंग से प्रयोग किया जाए।	द्वितीयक उपकरण (उपाय) के रूप में शक्ति का प्रयोग- प्रतिबंध, व्यक्तिगत सुरक्षा के प्रमुख तत्त्व के रूप में मानव विकास
	शक्ति संतुलन महत्त्वपूर्ण है, सैन्य क्षमता के समतुल्य सत्ता	शक्ति संतुलन की सीमित उपयोगिता, सौम्य सत्ता (Soft Power) महत्त्वपूर्ण है।
	राष्ट्रों के बीच सहयोग:	राष्ट्रों के बीच सहयोग INGOs और NGOs
	सामंजस्यपूर्ण संबंध से ज्यादा अटल	प्रभावी हो सकते है।
	आदर्श और संस्थाओं का सीमित महत्त्व या मानक	आदर्श एंव संस्थाएँ महत्त्वपूर्ण, लोकतांत्रीकरण और संस्था बद्धता प्रभाव को बढ़ाते हैं।

स्रोतः 'ह्यूमन सेक्युरिटीः कांसेप्ट एंड मीजरमेंट (Human Security: Concept and Measurement) विषय पर प्रस्तुत, कांति वाजपेयी।

निष्कर्ष

वास्तव में ऐसी कोई स्थिति नहीं सम्भव प्रतीत होती है जिसे पूर्ण एवं स्थायी सुरक्षा कहा जा सके। इसकी चरम स्थिति पूर्णता के आस-पास हो सकती है तथा एक विशेष समयावधि के लिए यह स्थायी प्रतीत हो सकती है। प्रायः यह समग्र राष्टीय शक्ति की पर्यायवाची प्रतीत होती है। वास्तव में सुरक्षा एक स्थिति ही नहीं बल्कि एक प्रक्रिया भी है जो निरन्तर चलती रहती है। चूंकि किसी राज्य के खतरे स्थायी और अस्थायी दोनों प्रकृति के होते हैं तथा नित नये खतरे भी उपस्थित होते रहते हैं अतः सुरक्षा के लिए खतरे सदैव उपस्थित रहेंगे और पूर्ण सुरक्षा कभी भी नहीं प्राप्त की जा सकेगी।[28] शक्ति एवं शान्ति के द्वारा राज्य की सुरक्षा के आन्तरिक एवं वाह्य खतरों को मात्र कम किया जा सकता है किन्तु समाप्त नहीं किया जा सकता है।

सुरक्षा चिंतन पर वाल्ट ने चेतावनी दी कि अगर सुरक्षा के अध्ययन का और अधिक विस्तार किया गया तो पर्यावरण, वंश, जाति, बाल अपराध या आर्थिक मंदी आदि भी सुरक्षा के खतरे में शामिल हो जाएँगे तो इससे इसका बौद्धिक सामंजस्य नष्ट हो जाएगा ओर इस प्रकार की समस्याओं का समाधान और भी कठिन हो जाएगा। लेकिन उनका यह सुझाव था कि सुरक्षा अध्ययन को इस तरह परिभषित किया जा सकता है- "खतरे का अध्ययन और सैन्यबल का प्रयोग व नियंत्रण,"। सुरक्षा चिंतन जितना संकुचित होगा उतना ही लाभदायक होगा।[29]

प्रारम्भ में सुरक्षा चिंतन पर यथार्थवादी विचारकों का अधिक प्रभाव था जिनके अनुसार शक्ति ही सुरक्षा का अन्तिम सर्वमान्य समाधान हो सकती है। दूसरी ओर आदर्शवादी विचारकों ने शांति एवं मानवाधिकारों पर कुछ अधिक ही जोर दिया जो कुछ हद तक अव्यवहारिक है। यद्यपि नव यथार्थवादी दृष्टिकोण 'शक्ति की विलासित' से निकलने में मदद करता है और आदर्शवादी दृष्टिकोण की तरह अव्यावहारिक भी नहीं है। सुरक्षा चिंतन का तार्किक दृष्टिकोण इससे भी आगे जाकर कहता है कि सुरक्षा शक्ति का कारक नहीं बल्कि सहयोगी है तथा यह सदैव शांति का परिणाम नहीं भी होती है। अन्ततः यह सत्य है कि सुरक्षा की कोई एक निश्चित व सर्वमान्य परिभाषा नहीं दी जा सकती है। इसीलिए अर्नाल्ड बुल्फर ने इसे 'एक अस्पष्ट प्रतीक' (An ambiguous Symbul) तथा बैरी बुजान ने 'अविकसित संकल्पना' कहा। अर्नाल्ड बुल्फर का यह कथन भी सही है कि राष्ट्रीय सुरक्षा का तात्पर्य भिन्न-भिन्न राष्ट्रों के लिए भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न होता है।

संदर्भ एवं टिप्पणियाँ

1. Paul D Williams, Security Studies : An Introduction, Routledge New York, 2008, Page 2-3

2. एलन डूपोन्ट, न्यू डायमेंशन आफ सेक्यूरिटी, द न्यू सेक्यूरिटी एजेण्डा इन द एशिया पैसिफिक रीजन, लंदन, 1997, पृ. 31

3. The relatively new concept of national security was first introduced in the United States after World War II, and has to some degree replaced other concepts that describe the struggle of states to overcome various external and internal threats. The concept of national security became an official guiding principle of foreign policy in the United States when the National Security Act of 1947 was signed on July 26, 1947 by U.S. President Harry S. Truman. Quoted from http://en.wikipedia.org/wiki/National_security

4. Walter Lippmann, U S Foreign Policy: Shield Of The Republic, Little Brown, Boston, 1943, Page 51

5. Arnold Wolfers, "National Security" as an Ambiguous Symbol," Political Scence Quarterly, 67 (1952), page 485

6. आरनर्ड वुल्फर्स; डिस्कार्ड एण्ड कोलाबोरेशन; बाल्टीमर; 1962; पृष्ठ 95

7. सिंह विजेन्द; भारत की आन्तरिक सुरक्षा समस्यायें, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स; नई दिल्ली, 2009, पृ.4

8. डेविड बाल्डाविन, द कनसेप्ट आफ सेक्यूरिटी, रिव्यू आफ इण्टरनेशनल स्टडीज, ब्रिटिश इंटरनेशनल एशोसियेशन, वा.23, 1997, पृ.13

9. Security in the contemporary World, Robert S. Mc Namara, Before the American Society of Newspaper Editors, Montreal, Canada. May 18,1966 on www.oldcolo.com

10. वही

11. टी. के. उम्मन, सुरक्षा एक नया दृष्टिकोण, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 2010 पृ. 11-29

12. ब्राउन हेराल्ड (1983) 'थिकिंग अबाउट नेशनल सिक्यूरिटीः डिफेंस एवं फारेन पालिसी इन ए डेन्जरस वर्ल्ड', वेस्टव्यू प्र(शार्ट डिस्क) पब्लिकेशन।

13. वाल्ट स्टीफेन एम0, द रेनेसा आॅफ सेक्यूरिटी स्टडीज, इंटरनेशनल स्टडीज क्वाटरली 1991, 35, पृ सं 211

14. Paul D Williams, Security Studies : An Introduction, Routledge New York, 2008, Page 4

15. डेविड बाल्डाविन, वही, पृ0 12-18

16. Paul D Williams, ibid, Page 5

17. शांति और संघष समाधान का परिचय (MGP 005) गाँधीवादी अध्ययन कार्यक्रम पृ 169

18. David Dewit, common, comprehensive and cooperative security; the pacific review,

part 7, no 1, 1994 ; शांति और संघष समाधान का परिचय (MGP 005) गाँधीवादी अध्ययन कार्यक्रम पृ 169 में उद्धृत

19. शांति और संघष समाधान का परिचय, वही

20. एलन डूपोन्ट, वही, पृ. 35

21. Hanna Newcombe, What is Common Security? A conceptual comparision, www.peacemagazine.org 26.09.2018)

22. Bajpei Kanti, Human Society: Concept and measurement, Kroc Institute Occasional Paper, August 2000, page 08

23. वही

24. वही

25. Bajpei Kanti, वही पृ0

26. वही

27. वही

28. In both respects a nation's security can run a wide gamut from almost complete insecurity or sense of insecurity at one pole, to almost complete security or absence of fear at the other. (Arnold Wolfer, National security As An Ambiguous Symbol, Political Science Quarterly, vol. LXVII, December 1952, no. 4 page 482)

29. टी0 के0 उम्मन, वही

Corresponding Author

Dr. Vijendra Singh*

Associate Professor, Department of Defence & Strategic Studies, Sakaldiha P. G. College, Chandauli, Uttar Pradesh

E-Mail – vijendradefence@gmail.com